189 P
691
H

राष्ट्रीय-तरंग

691

लेखक

बुद्धू राम जी

बैरहना, प्रयाग।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

प्रकाशक

मोहनलाल

तालाब नेवलराय, प्रयाग।

प्रथम बार] सन् १९३० [मूल्य -)

891.431
B 859R

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR 1931
DEPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 691
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

राष्ट्रीय-तरंग

—*—

प्रार्थना

(गज़ल)

भगवान भारतवर्ष का दिन लौट कर कब आयेगा ।
करना गुलामी वृटिश की कब छूट हमसे जायेगा ॥
तोते को सुख सोने के पिंजड़े में नहीं मिलता प्रभू ।
वह चाह रखता है यही आज़ाद कब हो जायेगा ॥
हे दया सागर दीन-बन्धु श्रीपती औ यदुपती ।
आज़ादी का सुख दीजिये भारत का दुख कट जायेगा ॥
आज़ादी का मिलना प्रभू कुछ भी कठिन हरगिज़ नहीं ।
पर बिना तेरे सहारे क्यों भला मिल जायेगा ॥
जिन राक्षसों को आप मारे वे तो फिर पैदा हुये ।
सीता के बदले रावण भारत हरण कर जायेगा ॥

—:०:—

परदेशी शासन करते हैं

(गज़ल)

क्या भारत में कुछ ताब न जो परदेशी शासन करते हैं।
तहज़ीब सिखे थे जो हमसे अब शाह हमारे बनते हैं॥
यह भारत था विद्या का भवन क्या ख़्याल तुम्हारे भूल गये।
चेले अब मार्ग दिखाते हैं धन लूट के कोरा करते हैं॥

थे भारत में मशहूर वीर जिनकी सानी नहिं कोई था।
हा! उनके वंशज बन्दर से भी पार नहीं पा सकते हैं॥
ऐ! महलों के रहनेवालो कुछ दशा विचारो भारत की।
क्या तुम्हें शर्म नहीं आती है निज भाई भूखे मरते हैं॥

ख़ैरख़्वाह सरकारी बन तुम जिन्हें लाभ पहुँचाते हो।
वे प्रेम गुलाबी दिखला के सीधे को उल्टा करते हैं॥
खुब ऐशो असरत दिखला के सब भारत का धन लूट लिया।
पर हाँ साहब! करनेवाले स्वराज से दिल में डरते हैं॥

नौकरे फ़ौज़ पलटने सिपह तुमसे ही अब तक टिके हैं ये।
तुम जिस दिन आँखे लाल करो भारत में नहिं रह सकते हैं॥
गर धनी बनाना देश को है मित्रो स्वराज में लग जाओ।
बुद्धू स्वतंत्रता सम दूजा सुख और न मन में जँचते हैं॥

पैदा हो गये

(गज़ल)

दीन दुखियों के सहायक अब तो पैदा हो गये।
हिन्द होगा अब सुखी रोना था जो हम रो गये॥
पालसी धोखे की टट्टी इनकी जाने थे न हम,
नींद गहरी में पड़े थे जो था सोना सो गये।

हिन्द का सारा ख़ज़ाना लूट लन्दन ले गये,
अब तो कीजे होशियारी जो था खोना खो गये।
हमको तो है निज देश को आज़ाद करना भाइयो,
परवाह कुछ भी है नहीं हम हैं सताये जो गये।

सरकार के ऐ खैरख़्वाहो होश में आओ ज़रा,
समझा तो गाँधी है रहा समझे न बुद्धी धो गये।
जीन मलमल रेशमी थे जो विचारे ख़ुब बढ़े,
पैदा हुआ खद्दर है अब कपड़े विदेशी तो गये।

इल्फैंट कैंची सिगरटों ने मुख पे थे दावा किये,
लड़के उड़ाते थे धुआँ आदत छुड़ा कर बो गये।
बुद्धू है लेकिन आरज़ू आज़ादी पाने की हमें,
मिलने ही वाला है हमें सब जेल में हैं लो गये।

—०—

क्या बजाना है ?

(गज़ल)

हमें गाँधी का हुक्म मित्र गण बजाना है।
दीन भारत का कष्ट एक दम हटाना है॥
युरुप वालों को ठिकाना न अब कभी देना।
ठग्गुओं को यहाँ से दम बदम भगाना है॥
विदेशी वस्तुयें हरगिज़ न अब पसन्द करना।
दुखी भारत को तुम्हें गर सुखी बनाना है॥
दाने दाने को थे ये चाहते रुलाना तुम्हें।
उसी दाने के लिये अब इन्हें रुलाना है॥
तुम्हारा खाके ये धन ख़ूब हुये थे मोटे।
मोटाई इनकी सब अब तो हमें घटाना है॥
मेल ये चाहें गर मित्रवर तुमसे करना।
राय बुद्धू की है रस्ता इन्हें बताना है॥

—:o:—

क्या था

(गज़ल)

पूर्व भारतवर्ष में परजा नृपों के अंग थे।
दुख न होवे प्रजा को यह ख़्याल उनके संग थे॥

उनके मन में दग़ा करना कभी था जँचता नहीं।
सरकार मौजूदा के मिस्ले वे न करते तंग थे॥
मुसलमानी राज्य में काज़ी मुकर्रर थे यहाँ।
इन्साफ़ होते थे यहां न कुछ वकीली जंग थे॥
दीनों से ले धनियों तलक लेते खबर महराज थे।
ईश राजाओं के नीती से बड़े ही ढंग थे॥
सुख प्रजा को दिये होते चूँ नहीं करते कभी।
आज़ादी क्योंकर माँगते क्या अक़्ल इनके भंग थे॥
करणीं अपनी सोच के महाराज अब जाओ चले।
विश्वास तुमसे हट गया पहिले न जाने ढंग थे॥
बूढ़े और बच्चे सभी अब तो स्वराजी हैं बने।
नष्ट हो जायेंगे बुद्धू जो जमाये रंग थे॥

—o—

छोड़ दे

(ग़ज़ल)

ऐ मेरी सरकार अब तू ज़ुल्म ढाना छोड़ दे।
हम सबों के देश भारत का ख़ज़ाना छोड़ दे॥
क्या किया हमने ख़ता जो दे रहा हमको सज़ा।
इन दीन दुखियों बेकसों का आशियाना छोड़ दे॥

बादशाही काम तो हरगिज़ नहीं व्योपार का।
हम सबों के देश को दुखिया बनाना छोड़ दे॥
दुनिया में तो यह मुल्क भारत सुखका घर जन्नत सा था।
दावा नहीं इसमें तेरा यह है विराना छोड़ दे॥
बहुत भारी नींद से भारत निवासी हैं जगे।
जग गये तो जग गये इनको सुलाना छोड़ दे॥
हिन्दू मुसलमाँ दो बिरादर हैं निवासी हिन्द के।
हम सबों को पालसी बुद्धू दिखाना छोड़ दे॥

—:०:—

कालिज में पढ़ने न जाइये

(गज़ल)

बन कर गुलाम कालिज पढ़ने न जाइये,
भारत के दुखदातों से फन्दा छुड़ाइये।
मीठी मीठी बातों में इनके है विष भरा,
आ करके गिदड़ भपकी में धोखा न खाइये॥
नेता तुम्हारे देश के हैं जेल में पड़े,
तुमको भी है अब लाज़िम शामिल हो जाइये।
कर जोर बुद्धू कहता इनकी गुलामी छोड़ो,
आज़ाद हो के चैन की वंशी बजाइये॥

—०—

लन्दन की पुकार

(बहरतबील)

सारा लन्दन नगर बस यही कह रहा गाँधी बाबा कहाँ से ये पैदा हुआ। दिया कालों को दुश्मन हमारा बना हाय खद्दर प्रचारक यह पैदा हुआ। भारी भारी मशीने हैं खाली पड़ीं क्योंकि भारत तो चर्खे पे शैदा हुआ। देखने में तो गाँधी है सीधा बड़ा पर यह ज़ालिम हमारा है पैदा हुआ। इसके आगे नहीं पालसी अब चले सर्वनाशी हमारा है पैदा हुआ। जिसका कपड़ा कि लन्दन से धो जाता था वह तो गाँधी से भी बढ़ के पैदा हुआ। सारे गल्ले को आने से रोका यहाँ पीर ऐसा प्रयागी ये पैदा हुआ। जेलख़ाने को सब हैं बढ़ाते क़दम रंज बुद्धू नहीं दिल में पैदा हुआ।

चलो भाई मिलजुल चलें

(दादरा)

जेलख़ाने में जन्नत बहार चलो भाई मिल जुल चलें ॥ टेक ॥

शैर—देश के प्रेमी कभी जेल से नहिं डरते हैं।

स्वदेश के लिये मखमल का सेज तजते है।

डन्डे पड़ते हैं मगर आह नहीं करते हैं।

बृटिश की चाकरी करने से भी हिचकते हैं।

जेल से भारत में हो सुख अपार चलो भाई मिलजुल चलें ॥

शेर—बजा बजा के चलो जेल में करताला है।
जेल सुख मार्ग हमें बृटिश ने निकाला है।
जेल के वृक्ष में स्वतन्त्र फलने वाला है।
भारत का दुख सभी एक पल में कटने वाला है।
जेल में भारत का सुख भंडार चलो भाई मिलजुल चलें ॥ २ ॥
जेल बैकुण्ठ है सब को ख़बर सुनाते हैं।
यही कारण है जो सब उसमें घुसे जाते हैं।
जेल सुख भोगते राष्ट्रीय गीत गाते हैं।
वतन भारत को वे आज़ाद करने जाते हैं।
जेल से हो भारत का दुख संहार चलो भाई मिलजुल चलें ॥ ३ ॥
बृद्धू संसार में परलोक कुछ बनाओ तुम।
मातृ भारत के लिये कुछ कष्ट भी उठाओ तुम।
स्वराजी कार्य में कुछ प्रेम तो बढ़ाओ तुम।
मरो हो यों मरो कुछ नाम भी कर जाओ तुम।
जेल बैतरणी करेगा पार चलो भाई मिलजुल चलें ॥ ४ ॥

—:o:—

चरख़ा बहार

(दादरा)

मित्रो चर्खे का कीजे प्रचार चर्ख़ा घर घर चले ॥ टेक ॥
शेर—पुरुष स्त्री और बालक सभी चर्खा कातें।
धनी औ निर्धनी सब हर्ष सहित मिल कातें।

लाभ इससे तो एक निज वस्त्र दाम बचता है।
शान इज़्ज़त रहे आरोग्य तन भी रहता है।
होंगी इससे मशीने बेकार चर्ख़ा घर घर चले॥ १॥

ग़रीब देश के जो आज भूखों मरते हैं।
काम पाते न तब वे हाय हाय करते हैं।
करके चर्खे की मजूरी वे पेट पालेंगे।
सूत को कात कर कपड़ा भी बुना डालेंगे।
होगा दुखियों का बेड़ा पार चर्ख़ा घर घर चले॥ २॥

स्वराजी रण में चर्ख़ा फ़तह करायेगा।
बन्दरों को यहाँ से मित्रवर भगायेगा।
विदेशी कपड़ों से नफ़रत हमें करायेगा।
देश भारत का यह पैसा बहुत बचायेगा।
करे गाढ़ा औ खद्दर तयार चर्ख़ा घर घर चले॥ ३॥

चर्ख़ा कहता है कि सब मिल हमें चलाओगे।
देश भारत का तो तब तुम स्वराज पाओगे।
जब से छोड़ा हमें तुम सब अपार दुख पाये।
भूखों मरने लगे बुद्धू को तब तो सुध आये।
होगा चर्खे से तन का सिंगार चर्ख़ा घर घर चले॥ ४॥

—:o:—

सुख से कटेगा

(दादरा)

अब तो भारत में सुख से कटेगा जी ॥ टेक ॥

शैर—यहाँ पे बिक गये छः सेर तक गल्ला प्यारे,
कृपा गाँधी के है अब बहुत कुछ सस्ता प्यारे।
देश युरुप तो भूखों मरेगा जी ॥

युरुप से जो आते थे याँ कपड़े मशीन के,
झिनगे से भी झिनगे थे एक दम महीन थे।
दरपे उनके अब खद्दर चलेगा जी ॥

लगा के टोप जो ठाटें हमें दर्शाते थे,
हूस ब्लाडी तो कह हम लोग को हटाते थे।
डेरा इनका भी बुद्धू हटेगा जी ॥

—:o:—

नहीं रह सकता

(गज़ल)

अँगरेज़ अत्याचार कर अब राज कर सकता नहीं,
जो दिल दुखाये किसी का वह सुख से रह सकता नहीं।
अन्याय में है दुख भरा अरु न्याय में आनन्द है,
जो सोच लेगा इस क़दर धोखा वह खा सकता नहीं।

गड्ढा जो खोदे और को कुइयाँ उसे तैयार है,
धर्म की होती विजय अधरम तो रह सकता नहीं।
राजा का तो यह धर्म है समझे प्रजा को पुत्र सम,
हो न वर्तावा बुरा तो राज्य जा सकता नहीं।
किसी मज़हब में नहीं रिआया को दुख देना लिखा,
पर बादशाही ठाठ में यह ध्यान जम सकता नहीं।
बुद्धू इन्हें इतने ही दिन था राज्य करना हिन्द में,
जो विधाता ने लिखा वह टल कभी सकता नहीं।

—०—

शराब में कुछ भी मज़ा नहीं है

(बहर शिकस्ता)

छोड़ो अब तो शराब पीना शराब में कुछ नहीं मज़ा है।
बृटिश ही खोले है आपकारी तुम्हारा धन ले देता सज़ा है॥
जो बेचते है शराब मित्रो उन्हें तो ठीके में ख़ूब लूटा।
तुम्हें बनाकर के ये शराबी धन लूटता है भर भर के झूठा॥
कंगाल होते शराब पी के मातृ भारत का भाग्य फूटा।
है लाभ होता विदेशियों को पर तुम समझते हो इसको झूठा॥
निज देश का हानि सोच बुद्धू बनो स्वराजी यही रज़ा है॥

—०—

मचाय रहे रे

(दादरा)

धूम भारत में गाँधी मचाय रहे रे ॥ टेक ॥

भाई बहिने अज़ादी के कारण,
तन मन हैं अपना लगाय रहे रे ॥ १ ॥
छोटे छोटे बच्चे दर्जी से कुरते,
खद्दर के हैं अब सिलाय रहे रे ॥ २ ॥
गँजिया भँगिया शरबिया जो पीते,
वे भी हैं पैसा बचाय रहे रे ॥ ३ ॥
थोड़े से भाई ग़ुलामी के रंग में,
हैं उन्हें भी स्वराजी बनाय रहे रे ॥ ४ ॥
कपड़े मशीनी जो उम्दे बने थे,
वे भी खद्दर को हैं सर झुकाय रहे रे ॥ ५ ॥
गाँधी जवाहर देश के नेता जेलख़ाने में,
उम्र बिताय रहे रे ॥ ६ ॥
पल्ला टोपी नज़रों से ग़ायब,
सब हैं गाँधी की टोपी लगाय रहे रे ॥ ७ ॥
बुद्धू कहते अज़ादी की लहरें,
सबके हैं मनमें समाय रहे रे ॥ ८ ॥

—o—

जेल की धूम

(भजन)

गांधी बाबा जेहलिया बुला लो मुझे ।
अपने पीछे ही पीछे लगा लो मुझे ॥ टेक ॥

शैर—हम सबों को नींद से अच्छा जगाया आपने ।
खूब आज़ादी की शिक्षा है सिखाया आपने ।
यक बयक आंधी स्वराजी है चलाया आपने ।
हिन्द के दुख द्वन्द को तो है भगाया आपने ।
आज़ादी की सेजिया सुला लो मुझे ॥ १ ॥

शैर—ऐ ऋषी तेरे ही गुण को हिन्द में सब गारहे ।
सबको था मालूम की हम दुःख कैसा पारहे ।
आपके मददों से खुश हो जेल हैं सब जारहे ।
भूले भटके भाइयों को सीधे रस्ते ला रहे ।
अब ग़ुलामी से इनकी छुड़ा लो मुझे ॥ २ ॥

शैर—अब तो चाहे कुछ दिनों में हिन्द हो जावे सुखी ।
जिनसे बने कंगाल हम हो जायँगे अब वे दुखी ।
भगवान भारत यों खिले खिलता है ज्यों सूरजमुखी ।
बुद्धू स्वराजी कार्य में मिल जायँ हमहो एकरुखी ।
आज़ादी का चेला बना लो मुझे ॥ ३ ॥

—:०:—

स्त्रियों का पति से कहना

दोहा—भारत की बहिनें कहैं, निज पिय से समझाय।
ऐ मेरे पति देवता, चर्खा देव मँगाय॥
चौ०—चर्खा देव मँगाय तभी मन म्हारे चैन परैगो।
बिन इसके बालम सुन लीजै दिल खुश नाहिं रहैगो॥
सारे भारत भर मेँ प्यारे चर्खा धूम करैगो।
खद्दर के आगे सुन लीजे सब कपड़ा रोय मरैगो॥
स्वदेशी और बिदेशी कपड़ा में रण धूम मचैगो।
आखिरकार विदेशी कपड़ा हिन्द से दूर भगैगो।
धुनिया से रुई धुनवा कर चर्खा सूत रचैगो॥
दौड़—सीख गांधी की मानो, भला गर बुद्धू को जानो।
तुम्हें क्या करना चहिये
सारे वस्त्र विदेशी तजकर खद्दर धारण करिये॥

मुद्रक—सत्यवान आचार्य, 'शिशु' प्रेस, प्रयाग।